विज्ञप्ति

हे प्रभो! यह तेरापंथ

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 27 : नई दिल्ली : 28 सितम्बर-4 अक्टूबर 2018

२१६वें भिक्षु चरमोत्सव के उपलक्ष में
परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा रचित गीत

भिक्षु को वन्दन बारम्बार
तेरापथ सरताज! आज लो भक्तिभाव-उपहार।।

नरक तुम्हारे मुखदर्शन से कथन पथिक का सुनकर।
तव मुखदर्शन से क्या मिलता, प्रश्न पूज्य का सुन्दर।।
मेरा मुंह जो देखे पाए स्वर्ग-मोक्ष का द्वार।।१।।

श्वेताम्बर आगम आदेशों से हम सब चलते हैं।।
अम्बर के धारण में भी संयमपर्यव पलते हैं।।
आशाम्बर में यदि हो आस्था तो अम्बर-परिहार।।२।।

सन्तजनों को धोवण पानी देना अस्वीकारा।
दिया गया प्रतिबोध पवन जब स्वामीजी के द्वारा।
उड़ी भ्रान्ति की रजें, जाटणी देने को तैयार।।३।।

कितने पैर बताओ बाबा! घोड़े के होते हैं।
सहसा भाषण करने वाले कभी-कभी खोते हैं।
धीरे-धीरे गिनती कर-कर बतलाए पद चार।।४।।

माधावरम् चेन्नई नगरी, भाद्रव शुक्ला तेरस।
वीर भिक्षु गुरु तुलसी महाप्रज्ञ से प्रेरित नस-नस।
'महाश्रमण' हम करें साधना हो जाएं भवपार।।५।।

लय - यही है जीने का विज्ञान.....

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण चेन्नई में

संयम से मिलती है सफलता

१६ सितम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में चारों गतियों में आयुष्य के विषय में चर्चा करते हुए तथा संयम को सफलता प्राप्ति का उपाय बताते हुए उसे आत्मसात् करने की प्रेरणा प्रदान की।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के पश्चात् मुनिपत की आख्यान शृंखला का पुनः प्रारम्भ किया। श्रीमती चंचलादेवी बरड़िया ने पूज्यप्रवर से २९ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

अखिल भारतीय जैन माइनारिटि फेडरेशन के अध्यक्ष श्री ललित गांधी ने कहा--'जैन समाज में जितने संप्रदाय हैं, उनमें सबसे अनुशासित समुदाय के रूप में तेरापंथ संप्रदाय को पहचाना जाता है। हजारों की भीड़ में भी शोरगुल नहीं होना, ऐसा अनुशासन शायद अन्य किसी समाज में देखने को नहीं मिलता है। आचार्यश्री महाश्रमणजी की अहिंसा यात्रा न केवल भारत, बल्कि पूरे विश्व में गूंज रही है। भारत भर के जैन समाज के लोग तो आचार्यश्री महाश्रमणजी से परिचित हैं ही, अहिंसा यात्रा के माध्यम से विभिन्न धर्मों के करोड़ों लोग आचार्यश्री को जानने लगे हैं, आपके विचारों से प्रभावित हुए हैं और आप पर श्रद्धा करने लगे हैं। इस अहिंसा यात्रा के दौरान आचार्यश्री ने जो जैन धर्म की प्रभावना बढ़ाने का कार्य किया है, वह जैन शासन के इतिहास में स्वर्णिम अध्याय के रूप में जाना जाएगा। नेपाल चतुर्मास के दौरान आई प्राकृतिक आपदा में पूरे विश्व ने आचार्यश्री का चमत्कार साक्षात् देखा है। उस संकट की घड़ी में भी आचार्यश्री ने अपने आचार से कोई समझौता नहीं किया। जिसके माध्यम से जैन धर्म की मिसाल पूरे विश्व में कायम हुई।'

सुश्री काव्या बांठिया ने अपनी सी.डी. 'काव्यांजलि' पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित करते हुए गीत को प्रस्तुति दी।

काल के दो भाग

१७ सितम्बर। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' प्रवचनशृंखला के क्रम को आगे बढ़ाते हुए अपने पावन प्रवचन में कहा--'वैमानिक देवगति में बारह देवलोक हैं, बारह कल्प हैं, इसमें जो दूसरा देवलोक या कल्प है ईशान। उसके देवताओं का आयुष्य उत्कृष्टतया दो सागरोपम से कुछ अधिक हो सकता है। काल के दो भाग हैं। एक भाग गणित का विषय बनता है। जैसे एक, दो तीन, चार, हजार, लाख, करोड़, अरब, खरब, इस प्रकार शीर्ष प्रहेलिका तक तो गणित का विषय बनता है। शीर्ष प्रहेलिका तक संख्या बहुत लंबी हो जाती है। उसके बाद के काल को मापने का तरीका उपमा है। उसे औपमिक काल कहा जाता है। वह उपमा से बताया जाता है। उसमें एक है पल्योपम और दूसरा है सागरोपम। जो पल्य (धान्य का कोठा) की उपमा से बताया जाता है वह काल पल्योपम होता है और जो सागर की उपमा से बताया जाता है वह काल सागरोपम होता है। एक योजन लम्बे, एक योजन चौड़े और एक योजन ऊंचे कुछ अधिक तिगुनी परिधि वाले कोठे को केशाग्रों से ठूंस-ठूंस कर भरा जाए और सौ वर्षों बाद एक बालाग्र को बाहर निकाला जाए। फिर सौ वर्ष बीतने पर दूसरा बालाग्र, फिर सौ वर्ष बीतने पर तीसरा बालाग्र निकाला जाएं। यों हर बार सौ वर्षों बाद एक-एक बालाग्र निकाला जाए। इस प्रकार करते-करते जब वह कोठा खाली हो, वह एक पल्योपम होगा। यह कितना लंबा काल है। ऐसे दस कोटा-कोटि पल्योपम होते हैं, तब एक सागरोपम होता है।

मनुष्यों का आयुष्य यौगलिक काल में काफी लम्बा होता था। फिर भी वह सागरोपम की अपेक्षा से बहुत कम होता था। क्रमशः मनुष्यों का आयुष्य भी घटता गया। आज तो सौ वर्ष पार करने वाले मनुष्य भी कम ही होते हैं।' आचार्यप्रवर ने मानव जीवन के तीन भागों--पूर्व, मध्यम और पश्चिम का वर्णन करते हुए तीनों भागों

में आध्यात्मिक दृष्टि से करणीय कार्यों का विवेचन किया।

आचार्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के उपरान्त मुनिपत के आख्यान का वाचन किया।

२५वें विकास महोत्सव का समायोजन

१८ सितम्बर। भाद्रपद शुक्ला नवमी। २५वां विकास महोत्सव। परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम का शुभारम्भ परम पूज्यप्रवर के द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार से हुआ। तेरापंथ महिला मंडल-चेन्नई की महिलाओं ने गीत के द्वारा गणाधिपति गुरुदेव तुलसी की स्तवना की। तेरापंथ विकास परिषद के सदस्य श्री मांगीलाल सेठिया और श्री पदमचन्द पटावरी ने तेरापंथ धर्मसंघ के विकास के संदर्भ में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। साध्वीवृंद ने 'तेरापंथ पंथ है विकास का महान' गीत को सामूहिक रूप में प्रस्तुति दी।

साध्वीवर्याजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'आचार्य तुलसी का जीवन विकास की यात्रा है। उन्होंने अपने संघ में विकास को हमेशा ऊर्ध्वमुखी बनाए रखा। उनकी विकास यात्रा का आधार था उनका साहस। उनमें नित नया करने का साहस था। उन्होंने अपनी सृजनधर्मिता से अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान, समणश्रेणी आदि अनेकानेक अवदान दिए। विरोध और सम्मान--दोनों प्रकार की स्थितियों में भी उन्होंने अपना संतुलन नहीं खोया। इसी कारण वे विकास पथ पर निरंतर आगे बढ़ते गए और तेरापंथ धर्मसंघ को भी आगे बढ़ाते गए। वे प्रेरणा पुरुष थे। उनकी प्रेरणा से कितने-कितने व्यक्तित्व निर्मित हुए। मैं आज के दिन विकास पुरुष आचार्य तुलसी के चरणों में अपनी श्रद्धा प्रणति अर्पित करते हुए आचार्यश्री महाश्रमणजी से यही आशीर्वाद चाहती हूं कि हम आपकी पावन शासना में निरंतर विकास के पथ पर वर्धमान रहें।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'आज का दिन विकास के शलाकापुरुष आचार्य तुलसी से जुड़ा हुआ है। यह दिन विकास की अनेक गाथाओं को अपने भीतर समेटे हुए है। तेरापंथ धर्मसंघ आचार्य महाप्रज्ञजी का युग-युग तक आभारी रहेगा कि उन्होंने आचार्य तुलसी के पट्टोत्सव को विकास महोत्सव के रूप में स्थापित कर धर्मसंघ को नया और अनूठा अवदान दिया। हमारे धर्मसंघ के विकास का मूल आधार है आचार्य भिक्षु का अनुशासन। जयाचार्य ने उनके अनुशासन को और भी व्यवस्थित रूप दिया। आचार्य कालूगणी ने तेरापंथ धर्मसंघ में विद्या के बीजों का वपन किया। आचार्यश्री तुलसी ने तो विकास की इतनी दिशाएं खोली हैं, इतने क्षीतिज उद्घाटित किए हैं कि उनका व्यवस्थित लेखा-जोखा होना भी मुश्किल है। आचार्य तुलसी उत्साह के जीवंत प्रतीक थे। वे हर क्षेत्र में संघ को आगे बढ़ाना चाहते थे।

हमारा वर्तमान नेतृत्व भी विकास के प्रति सजग है। परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने ज्ञान विकास की दृष्टि से मुझे एक परिपत्र प्रदान किया-- महाप्रज्ञ श्रुताराधना का सप्तवर्षीय पाठ्यक्रम।' मुझे ऐसा लगता है कि उस पाठ्यक्रम से जो साधु-साध्वियां जुड़ेंगे, निश्चित रूप से वे अपने लिए ज्ञान विकास की पर्याप्त दिशाएं खोल सकेंगे। नेतृत्व दिशा देता है, चलना हम सबको ही है। हम सब चलेंगे, तब विकास का रथ तेजी से चलेगा। चतुर्विध धर्मसंघ को वीर्य का प्रस्फोट करके ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ना है। सेवा के क्षेत्र में विकास करना है।

आचार्यश्री की यह अहिंसा यात्रा तेरापंथ शासन में किसी आचार्यप्रवर द्वारा की जाने वाली सबसे लंबी यात्रा है। यह यात्रा विकास की प्रतीक है। इस यात्रा से जो जनसम्पर्क हो रहा है, नए लोग जो सम्पर्क में आ रहे हैं और उन्हें जीवन का बोध मिल रहा है, वह भी संघ विकास का महत्त्वपूर्ण घटक है। संघ में साहित्य की यात्रा बहुत अच्छी हुई है, लेकिन अभी भी विराम की स्थिति नहीं है। साधु-साध्वियों को और भी विकास करना है। आगम अनुसंधान का महत्त्वपूर्ण काम चला है, वह भी विकास यात्रा का मुख्य अंग है। और भी ऐसे अनेक घटक हैं, जिनके माध्यम से तेरापंथ सर्वांगीण विकास कर रहा है।

साधु-साध्वियों की संख्या में भी विकास हुआ है, तेरह संतों से जिस संघ का उद्भव हुआ था आज

लगभग सात सौ साधु-साध्वियां हैं, इसके अलावा समणश्रेणी भी है, लेकिन यह संख्या पर्याप्त नहीं है। संख्या की दृष्टि से आचार्यप्रवर ने कोलकाता में एक लक्ष्य निर्धारित किया, उस लक्ष्य की पूर्ति के लिए हम सबको प्रयास करना है। कई साध्वियों ने मुमुक्षु भाई-बहनों को तैयार किया है, लेकिन इस कार्य को और अधिक गति देनी है। प्रत्येक साधु-साध्वी यह लक्ष्य बनाए कि कम से कम एक व्यक्ति को मुमुक्षु बनाना है। इस प्रकार संघ के विकास में हमारी भी सेवाएं जुड़ सकती हैं।

विकास का कार्य गुरुओं के प्रताप से होता है। तप के क्षेत्र में भी हमने कितना विकास किया है। छोटे-छोटे साधु-साध्वियां मासखमण तप कर रहे हैं, यह सब गुरु की शक्ति और गुरु के अनुग्रह से होता है। हमारी समणश्रेणी भी बहुत विकास कर रही है, विदेशों में काम कर रही है, यह भी संघ के विकास का एक घटक है। श्रावक समाज में भी विकास के क्षितिज उद्घाटित हो रहे हैं। मैं इस अवसर पर मंगलकामना करती हूं कि आचार्यप्रवर के सक्षम नेतृत्व में हमारी विकास यात्रा उत्तरोत्तर गतिशील रहे।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आज भाद्रपद शुक्ला नवमी है। विकास महोत्सव मनाया जा रहा है। वर्षों तक हमने भाद्रव शुक्ला नवमी को परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के पट्टोत्सव के रूप में मनाया था। जब गुरुदेव तुलसी ने दिल्ली में यह फरमा दिया कि अब मेरा पट्टोत्सव नहीं मनाना, तब उन्हीं के उत्तराधिकारी आचार्य महाप्रज्ञजी ने एक प्रकल्प प्रस्तुत किया कि हम पट्टोत्सव नहीं, विकास महोत्सव मनाएं। तब से विकास महोत्सव की परंपरा चल रही है।

आदमी को सामान्यतया यथास्थिति रहना अभीष्ट नहीं होना चाहिए, कुछ आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। विकास के बारे में ध्यान देकर एक लक्ष्य निर्धारित कर लेना चाहिए। फिर सफलता के लिए उस लक्ष्य की दिशा में गति करना आवश्यक होता है। लक्ष्य के बिना गति कैसे हो सकेगी, इसलिए पहले मंजिल स्पष्ट होनी चाहिए। फिर आदमी को सधे हुए कदमों से आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। हमारे जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ में साधु-साध्वियां, समणश्रेणी और श्रावक-श्राविकाएं हैं। अनेक संघीय संस्थाएं हैं। सबका विकास होना चाहिए।

विकास के लिए विकास की दृष्टि का होना भी आवश्यक है। जब तक विकास की दृष्टि स्पष्ट नहीं होती, तब तक विकास होना कठिन होता है। कोई दृष्टि देने वाला मिल जाए और फिर दृष्टि सृष्टि में बदल जाए तो विकास संभव हो सकता है।

हमारे धर्मसंघ में आचार्य भिक्षु ने मानों एक विरवा रोपा था। उन्होंने स्वयं विकास का प्रयास किया था। आगे उनकी उत्तरवर्ती परंपरा चली। पूर्ववर्ती आचार्यों ने धर्मसंघ की सुरक्षा और विकास का प्रयास किया था। मैं तो सभी पूववर्ती आचार्यों के प्रति प्रणत हूं कि उनकी कृपा से यह विरवा आज भी हमें प्राप्त है। हम विकास की दिशा में आगे बढ़ते रहें, यह अभिलषणीय है।

पूज्यप्रवर ने विकास महोत्सव के संदर्भ में स्वरचित गीत के संगान से पूर्व उसकी संक्षिप्त व्याख्या करते हुए कहा--'हमारे विकास की दृष्टि से अनेक बाते हैं। उनमें एक प्रमुख है--साधना। साधना के क्षेत्र में हम संकल्प के साथ आगे बढ़ते रहें। प्रवचन भी एक अच्छा उपक्रम है। हमारे साधु-साध्वियों में प्रवचन का अच्छा तरीका बना रहना चाहिए, यथासंभव अच्छा तरीका विकसित भी करना चाहिए। क्योंकि प्रवचन उपकार का अच्छा माध्यम है। प्रवचन नियमित होना चाहिए। जितना संभव हो सके, प्रवचन समयबद्धता के साथ शुरू हो जाए और जितना संभव हो सके पूर्व तैयारी के साथ भाषण देना चाहिए। सुबह के व्याख्यान में आगम को आधार बनाने का अथवा उसे उद्धृत करने का यथासंभव प्रयास करना चाहिए। आगम सूक्तों से मानों श्रोताओं के कान पवित्र हो जाएं।

हमारा व्यवहार भी कुशल होना चाहिए और भाषा शिष्ट, मिष्ट और विशिष्ट होनी चाहिए। परम प्रभु में हमारी आस्था रहे, वे हमारी आंख के तारे बने रहें। जितना संभव हो, हम दूसरों की सेवा करते रहें। दूसरों

को चित्त समाधि पहुंचाने का प्रयास करते रहें। हमारी शासन निष्ठा पुष्ट रहे। तुच्छ बातों को लेकर संघ से बाहर पांव नहीं रखना चाहिए।

हमारा पुरुषार्थ मुखर रहे। क्योंकि सिद्धि पाने के लिए, सफलता पाने के लिए अच्छा पराक्रम ही सफलता की चाबी है। हमें भगवान महावीर का शासन, भिक्षु स्वामी का शासन प्राप्त हुआ। गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी, जिनके साक्षात् सान्निध्य में रहने का सुअवसर हमें मिला है, उनका हम स्मरण करते हैं।'

आज हम चेन्नई में विकास महोत्सव मना रहे हैं। जैसे मर्यादा महोत्सव के लिए हमारा एक पत्र है, लिखत है। विकास महोत्सव के लिए भी हमारा एक लिखत बना हुआ है। उस पर परम पूज्य गुरुदेव तुलसी और परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी के हस्ताक्षर हैं और मूलतः लिपि आचार्य महाप्रज्ञजी की है। मैं अब विकास महोत्सव के आधारभूत पत्र को सुनाना चाहता हूं।' आचार्यप्रवर ने उस लिखत पत्र का वाचन किया।

पूज्यप्रवर ने विकास महोत्सव के उपलक्ष में स्वरचित गीत का समुच्चारण किया। पूज्यप्रवर द्वारा रचित गीत पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित है। आचार्यप्रवर ने चारित्रात्माओं के लिए चतुर्मास पश्चात्कालीन निर्देश भी प्रदान किए, जो पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित हैं।

धर्म का टिफिन तैयार करो

१६सितम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित प्रवचन शृंखला को आगे बढ़ाते हुए कहा--'बारह देवलोकों में चौथा कल्प है माहेन्द्र। उसके देवों का आयुष्य कम से कम दो सागरोपम का होता है। साधना करने वाला व्यक्ति चौथे देवलोक में जाकर पैदा हो सकता है। आदमी को सोचना यह चाहिए कि धन, मकान सब यही रहने वाले हैं, धर्म साथ में जाने वाला है। वह धर्म की कमाई कर रहा है या नहीं, उसका धर्म का टिफिन तैयार हो रहा है या नहीं? जो व्यक्ति हिंसा, झूठ, चोरी आदि पापों में रत रहता है, वह मरकर नरक या तिर्यंच गति में पैदा हो सकता है। जो व्यक्ति सामान्य जीवन जीता है, भला है, न व्रत लेता है और न ही हिंसा आदि ज्यादा पाप करता है, वह मरकर पुनः मनुष्य बन सकता है। जो व्यक्ति सराग संयम का पालन करता है, सम्यक्त्वी होता है, वह मरकर देवगति में उत्पन्न हो सकता है। जो मरकर नरक या तिर्यंच में पैदा होता है, वह मानों मूल पूंजी को भी गंवा देता है। जो आदमी मरकर पुनः मनुष्य बनता है, वह मनुष्य जन्म रूपी मूल पूंजी को सुरक्षित रख लेता है। जो मरकर देवगति में उत्पन्न होता है, वह मानों मूल पूंजी को बढ़ा लेता है।'

पूज्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के पश्चात् मुनिपत के आख्यान का वाचन किया। श्री बाबूलाल देवता ने पूज्यप्रवर से ६१ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

साधना की दृष्टि से मानव जीवन है सर्वोत्तम

२० सितम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'चार गतियों में देवगति भौतिकता की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानी जा सकती है, परन्तु साधना की दृष्टि से मनुष्यगति सर्वोत्तम होती है। चौरासी लाख जीव योनियों में एक दृष्टि से मनुष्य की योनि सर्वश्रेष्ठ होती है। क्योंकि संज्ञी (गर्भज) मनुष्य ही छठे से चौदहवें गुणस्थान में रह सकता है। अन्य किसी योनि का प्राणी पांचवें गुणस्थान से आगे नहीं जा सकता। नारक और देवता तो चौथे गुणस्थान से भी आगे नहीं जा सकते। मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है, जो साधना करके मोक्ष में जा सकता है। इस आधार पर मनुष्य गति को सर्वश्रेष्ठ कहा जा सकता है।

मनुष्य में भी स्त्री मरकर कभी सातवीं नरक में नहीं जा सकती, पुरुष जा सकता है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जितना पाप पुरुष कर सकता है, उतना पाप एक स्त्री नहीं कर सकती। यह भी एक

तथ्य है कि कोई-कोई उपलब्धि पुरुष ही प्राप्त कर सकता है, स्त्री नहीं। स्त्री (देवी) दूसरे देवलोक तक ही उत्पन्न हो सकती है, उससे ऊपर के देवलोकों में नहीं।'

गरिमापूर्ण संस्था है जैन विश्व भारती

परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आज जैन विश्व भारती का वार्षिक अधिवेशन समायोजित हुआ। आचार्यप्रवर ने उस संदर्भ में कहा--'जैन विश्व भारती तेरापंथ समाज से संबद्ध एक केन्द्रीय संस्था है, वह एक गरिमापूर्ण संस्था है, ऐसा प्रतीत हो रहा है। वह दो दृष्टियों से गरिमापूर्ण लगती है--१. उसके विशाल परिसर में परम पूज्य गुरुदेव तुलसी ने अनेक चतुर्मास किए, निरंतर दो-दो चतुर्मास भी किए। परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने भी गुरुदेव तुलसी के साथ और बाद में भी वहां चतुर्मास किए। ऐसे महापुरुषों के प्रलम्ब प्रवास से मानों वह तो एक तपोभूमि बन गई। जैन विश्व भारती के परिसर में संतों का सेवाकेन्द्र है। समणियां भी वहां रहती हैं। मुमुक्षु बहनें भी वहां रहती हैं और अभी तो वहां साध्वियों का भी प्रवास हो रहा है। जहां इतने साधक लोग रहते हैं, वह स्थान तो अपने आप में साधना भूमि बन जाता है। वहां का परिसर भी गरिमापूर्ण और सुन्दर है। प्रातःकालीन भ्रमण के लिए जैन विश्व भारती बहुत अच्छा स्थान है। गुरुदेव तुलसी आचार्य महाप्रज्ञजी के साथ सुबह-सुबह वहां भ्रमण किया करते थे। वहां की हवा भी मानों दवा का थोड़ा काम कर सकती है।

जैन विश्व भारती की गतिविधियां भी महत्त्वपूर्ण हैं। वहां एक ओर ज्ञान की आराधना होती है। जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय जैन विश्व भारती से जुड़ा हुआ है। वहां महाविद्यालय भी संचालित है। जैन विश्व भारती द्वारा लाडनूं, टमकोर और जयपुर में विद्यालय भी संचालित हो रहे हैं। उनके माध्यम से कितने- कितने विद्यार्थियों को आगे बढ़ने का अवसर मिल रहा है। जैन विश्व भारती में सारस्वत साधना होती है, ज्ञान की आराधना होती है। जहां ज्ञान की आराधना होती है, वह स्थान भी एक दृष्टि से गरिमापूर्ण हो जाता है। इस प्रकार जैन विश्व भारती अपनी सीमा में शिक्षा का एक सुन्दर उपक्रम चला रही है। यह उपक्रम और ज्यादा पुष्ट होता रहे और गुणवत्ता के साथ आगे बढ़ता रहे।'

जैन विश्व भारती में प्रेक्षाध्यान की साधना का उपक्रम भी चलता है। वहां स्थित वर्धमान ग्रंथागार में मानों साहित्य का भण्डार है। उसमें कितना-कितना साहित्य है। उस परिसर में सेवा का कार्य भी चलता है। आयुर्वेदिक औषधियां वहां उपलब्ध हो जाती हैं, कितने-कितने लोग उसके माध्यम से स्वास्थ्य लाभ का प्रयास करते हैं। एक दृष्टि से मानों तेरापंथ समाज का भाग्य है कि उसके द्वारा जैन विश्व भारती जैसी संस्था संचालित हो रही है।

उस संस्था को परम पूज्य गुरुदेव तुलसी और परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी का आशीर्वाद और पथदर्शन प्राप्त हुआ है। कितने-कितने चारित्रात्माओं व गृहस्थ कार्यकर्ताओं का कितना समय, कितना श्रम, कितनी शक्ति उस संस्थान में लगी है, लग रही है। उस संस्था को 'कामधेनु' कहा गया है। वह मानों 'जयकुंजर' है। एक ऐसा हाथी है, जिसकी संभाल होती रहे, उसे पोषण प्राप्त होता रहे तो वह हाथी मजबूत रह सकता है, स्वस्थ रह सकता है और अच्छा कार्य कर सकता है।

आज जैन विश्व भारती का अधिवेशन आयोज्य है। एक टीम आती है और एक समय के बाद परिवर्तन भी हो जाता है। परिवर्तन तो दुनिया का सामान्य क्रम है। जाने वाले के मन में यह आत्मसंतोष होना चाहिए कि मैंने अच्छा कार्य किया और आने वाले के मन में और ज्यादा अच्छा कार्य करने का उत्साह रहना चाहिए।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'जैन विश्व भारती आचार्यश्री तुलसी का समाज को एक महान अवदान है। वहां शिक्षा, साधना, सेवा, शोध, साहित्य, समन्वय और संस्कृति इन सात सकारों के माध्यम से रचनात्मक उपक्रम चल रहे हैं और वहां का स्थान वास्तव में तपोवन जैसा है। आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी और आचार्यश्री महाश्रमणजी--तीन-तीन महान आचार्यों के आध्यात्मिक विकिरणों से उस

स्थान के वाइब्रेशन्स इतने शुद्ध हो गए हैं कि वहां जाने मात्र से शांति मिलती है, वहां रहने वाले स्वास्थ्य का अनुभव करते हैं। वहां साधना के लिए भी अच्छा वातावरण है। विश्वविद्यालय के माध्यम से शिक्षा का उपक्रम निरंतर चलता है। सेवा का भी उपक्रम चलता है। साहित्य और रिसर्च का कार्य भी चलता है। ऐसे संस्थान के लिए गुरुदेव तुलसी ने 'कामधेनु' शब्द का प्रयोग किया। उसे समाज से समुचित संपोषण प्राप्त होता रहे तो वह पूरे जैन समाज के लिए ही नहीं, पूरी मानव जाति के लिए उपयोगी हो सकती है। परम पूज्य आचार्यश्री के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में जैन विश्व भारती के माध्यम से जो आध्यात्मिक गतिविधियां चल रही हैं, उन गतिविधियों से मानव जाति उपकृत होती रहे, मंगलकामना।'

जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कीर्तिकुमारजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री रमेशचंद बोहरा और मंत्री श्री राजेश कोठारी ने अपने द्विवर्षीय कार्यकाल की सम्पन्नता के संदर्भ में कृतज्ञ भावों को अभिव्यक्ति दी।

श्रीमती मधु सेठिया ने पूज्यप्रवर से २८ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

प्रज्ञा पुरस्कार समर्पण समारोह

आज के कार्यक्रम में जैन विश्व भारती द्वारा सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. शिवकुमार सरीन को प्रज्ञा पुरस्कार-सन् २०१८ समर्पित करने का उपक्रम रहा। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'जैन विश्व भारती के द्वारा अनेक पुरस्कार भी दिए जाते हैं। यह एक बड़ी संस्था है। बड़ी संस्था का पुरस्कार भी अपने आप में महत्त्वपूर्ण होता है। आज डॉ. शिवकुमार सरीन को प्रज्ञा पुरस्कार दिया जाने वाला है। आपके हॉस्पिटल में भी हमारा जाना हुआ था। डॉक्टर मरीज को स्वास्थ्य लाभ देने का कितना प्रयास करते हैं। उच्च कोटि के डॉक्टर एक बड़े स्तर के व्यक्ति होते हैं। मुझे लगता है कि डॉक्टर में एक साधना होती है। अच्छी साधना के बिना अच्छा डॉक्टर बनना भी मुश्किल होता है। यह भी अनुमानित हो रहा है कि वे पिछले जन्म की साधना साथ में लेकर आते हैं और यहां भी कुछ साधना करते हैं, तब वे अच्छे चिकित्सक बनते हैं। अच्छा चिकित्सक बनना भी अपने आप में गौरव की बात होती है। जिनके जीवन में करुणा है, पवित्रता है, जिन्होंने सारस्वत साधना की है, जिन्होंने स्वास्थ्य शास्त्र की गहराई में जाकर अनुभव प्राप्त किए हैं और जो अपने अनुभवों से तथा अपनी कुशलता से कितने मरीजों को आश्वस्त बना देते हैं, अस्वस्थों को स्वस्थ बना देते हैं, वे अच्छे चिकित्सक बन सकते हैं।

डॉक्टर सरीन साहब को पुरस्कार दिया जाने वाला है। पुरस्कार से व्यक्ति सम्मानित होता है और कहीं-कहीं व्यक्ति से पुरस्कार सम्मानित होता है। पुरस्कार का भी मानों भाग्य होता है कि उसे अच्छे व्यक्ति के पास जाने का अवसर मिलता है। पुरस्कार सम्मान का माध्यम तो है ही, प्रेरणा भी उसके माध्यम से दी जा सकती है और वह जोड़ने का माध्यम भी बन सकता है। डॉक्टर सरीन साहब खूब अच्छी साधना करते रहें, जीवन में आध्यात्मिकता और बढ़ती रहे, करुणा और निर्मलता विकसित होती रहे, मरीज को चित्त समाधि प्राप्त होती रहे, मंगलकामना।'

जैन विश्व भारती के मंत्री श्री राजेश कोठारी ने डॉ. शिवकुमार सरीन का परिचय प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों आदि ने प्रज्ञा पुरस्कार के रूप में स्मृति चिन्ह, पुरस्कार राशि एक लाख का चेक आदि डॉ. सरीन को प्रदान किया। पुरस्कार स्वीकृति अभिभाषण में डॉ. शिवकुमार सरीन ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए 'लीवर' के संदर्भ में विस्तारपूर्वक अवगति दी।

श्री अरविन्द संचेती (मोमासर-अहमदाबाद) जैन विश्व भारती के अध्यक्ष निर्वाचित

आज अपराह्न में जैन विश्व भारती की वार्षिक साधारण सभा में श्री अरविन्द संचेती (मोमासर-अहमदाबाद) को संस्था के वर्ष २०१८-२० के कार्यकाल हेतु अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित किया गया। इस

साधारण सभा में मनोज लूणिया (चाड़वास-शिलोंग) को संस्था के आगामी कार्यकाल हेतु मुख्य न्यासी, श्री बाबूलाल बोथरा (कोलकाता), श्री रमेश गोयल (कोलकाता), श्री कैलाश डागा (जयपुर), श्री जोधराज बैद (दिल्ली), श्री कमलकिशोर ललवानी (कोलकाता), श्री चांदरतन दूगड़ (मुम्बई), श्री महेन्द्र श्रीश्रीमाल (बेंगलुरु) को न्यासी तथा श्री रमेश धाकड़ (मुम्बई), श्री मूलचंद नाहर (बेंगलुरु), श्री रूपचंद दूगड़ (मुम्बई) को पंच मंडल सदस्य के रूप में निर्वाचित किया गया। संपूर्ण निर्वाचन प्रक्रिया चुनाव अधिकारी श्री हंसराज बैताला की देखरेख में सम्पन्न हुई। निर्वाचन के उपरान्त नवनिर्वाचित अध्यक्ष, मुख्य न्यासी, न्यासीगण, पंचमंडल सदस्यगण तथा निवर्तमान अध्यक्ष श्री रमेशचंद बोहरा ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

तमिलनाडु के उपमुख्यमंत्री पूज्य सन्निधि में

आज तमिलनाडु के उपमुख्यमंत्री श्री वी. पन्नीरसेल्वम पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हुए। उन्होंने आते ही पूज्यप्रवर को सादर सविनय वन्दन किया। पूज्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान की तो वे बोले--'आप बहुत ही बड़ा कार्य कर रहे हैं। आपकी यह यात्रा तमिलनाडु की जनता के जीवन को नई दिशा दे रही है। आप ऐसा आशीर्वाद दें कि हमारी सरकार लम्बे समय तक लोगों की सेवा कर सके।'

आचार्यप्रवर--'सरकार में भी नैतिकता रहे और जनता में भी ईमानदारी विकसित हो। जनता में शराब का प्रचलन जितना कम हो सके, उतना अच्छा है।'

उपमुख्यमंत्री--'हमारी सरकार ने शराब की करीब २००० दुकानों को बंद कर दिया है। हमारा संकल्प है कि हम राज्य में शराबबंदी करेंगे। अम्मा (जयललिता) की भी यही इच्छा थी। हम लोगों ने इसके लिए नशामुक्ति केन्द्र भी स्थापित किए हैं, ताकि लोगों को नशा छोड़ने में सहायता प्राप्त हो।'

आचार्यप्रवर--'प्राणी मात्र के प्रति मन में दया का भाव रहना चाहिए। निर्भीकता और नैतिकता के साथ सत्पथ पर आगे बढ़ते रहना चाहिए। अच्छा कार्य करते रहना चाहिए।'

उपमुख्यमंत्री--'स्वामीजी! मैं आपके बताए मार्ग पर चलता रहूंगा।'

वार्तालाप के दौरान उपमुख्यमंत्रीजी ने तमिलनाडु में पूर्व में रहे जैन धर्म के प्रभाव और योगदान की भी चर्चा की। आचार्यप्रवर से मंगलपाठ सुनकर पूज्यप्रवर को पुनः वंदन करते हुए उन्होंने विदा ली। राज्यसभा सदस्य व तमिलनाडु सरकार के तमिल संस्कृति विकास मंत्री श्री के. पंडिया राजन उपमुख्यमंत्री के साथ पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन पाथेय से लाभान्वित हुए।

शुभ भावधारा में रहो

२१ सितम्बर। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जैन वाङ्मय में लेश्या पर प्रकाश डाला गया है। छह लेश्याएं हैं-कृष्ण, नील, कापोत, तेजसु, पद्म और शुक्ल। लेश्या एक चैतन्य की रश्मि है, रज्जु है, तैजस् शरीर के साथ जुड़कर कार्य करने वाली चेतना है। भावधारा प्रशस्त और अप्रशस्त दोनों प्रकार की होती है। भावधारा के अनुरूप लेश्या बन जाती है। भावधारा सबमें एक समान नहीं रहती और एक व्यक्ति में भी हमेशा एक जैसी भावधारा नहीं रहती। साधु में भी छह लेश्याओं की उपलब्धता मानी गई है।

छह लेश्याओं में से प्रथम तीन लेश्याएं अप्रशस्त, अशुभ और अधर्म हैं। शेष तीन लेश्याएं प्रशस्त, शुभ और धर्म हैं। कृष्ण लेश्या अति खराब है, नील लेश्या मध्यम रूप में खराब और कापोत लेश्या हल्के रूप में खराब, तेजो लेश्या थोड़े रूप में अच्छी, पद्म लेश्या मध्यम रूप में अच्छी और शुक्ल लेश्या बहुत अच्छी होती है। इस प्रकार क्रमशः विशुद्धता बढ़ती जाती है।

यह भी एक सिद्धांत है कि प्राणी जिस लेश्या में प्राण छोड़ता है, आगे उसी लेश्या में जन्म लेता है।

कृष्ण, नील तथा कापोत ये तीन लेश्याएं दुर्गति और तेजस्, पद्म और शुक्ल ये तीन लेश्याएं सुगति में ले जाने वाली होती हैं। आदमी को यह ध्यान देना चाहिए कि उसकी भावधारा अच्छी रहे। वह कृष्ण, नील और कापोत लेश्या में क्यों रहे? वह तो तेजस्, पद्म में रहने तथा शुक्ल लेश्या में ज्यादा से ज्यादा रहने का प्रयास करे, यह काम्य है।'

संघ के तीन महत्त्वपूर्ण प्रसंग : भाद्रव शुक्ला द्वादशी के संग

आज भाद्रव शुक्ला द्वादशी है। इस दिन के साथ हमारे धर्मसंघ के तीन प्रसंग जुड़े हुए हैं, ऐसा मेरी स्मृति में आ रहा है। पहला प्रसंग--भाद्रव शुक्ला द्वादशी को हमारे परम पूज्य, परम श्रद्धेय आचार्य भिक्षु ने अनशन ग्रहण किया था। परम पूज्य आचार्य भिक्षु हमारे धर्मसंघ के संस्थापक हैं, प्रवर्तक हैं। भाद्रव शुक्ला त्रयोदशी को अनशन की अवस्था में उनका महाप्रयाण हुआ। इस प्रकार आज का दिन आचार्य भिक्षु से संबंधित है।

दूसरा प्रसंग--हमारे धर्मसंघ के सप्तम आचार्य डालगणी का महाप्रयाण भाद्रव शुक्ला द्वादशी को लाडनूं में हुआ था। परम पूज्य डालगणी एक विलक्षण आचार्य थे। उनको छठे आचार्यश्री माणकगणी ने उत्तराधिकार नहीं सौंपा था। धर्मसंघ के प्रतिनिधि के रूप में वंदनीय मुनिश्री कालूजी स्वामी (रेलमगरा) ने तेरापंथ के सातवें आचार्य के रूप में उनका नाम उद्घोषित किया था। इस प्रकार वे आचार्यप्रवर द्वारा नहीं, संघ द्वारा मनोनीत आचार्य थे। तेरापंथ के आज तक के इतिहास में वे एकमात्र आचार्य हैं, जो संघ द्वारा प्रदत्त आचार्य पद पर आरूढ़ हुए। वे हमारे धर्मसंघ के तेजस्वी आचार्य के रूप में ख्याति प्राप्त हैं। उनका अपना अनुशासन था। करीब बारह वर्षों का उनका आचार्यकाल रहा। वे किसी आचार्यप्रवर द्वारा दीक्षित भी नहीं हुए। उन्हें मुनिश्री हीरालालजी स्वामी ने दीक्षित किया। आज तक के इतिहास में तेरापंथ के अन्य सभी आचार्यप्रवर राजस्थान के थे, एकमात्र डालगणी राजस्थान से बाहर के थे।

डालगणी श्रीमज्जयाचार्य के युग में दीक्षित हुए। उन्होंने बर्हिविहार में भी विचरण किया। अग्रणी के रूप में उन्होंने कच्छ की तीन यात्राएं की। बताया जाता है कि उन्हें 'कच्छीपूज' के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। उन्होंने मुनिश्री कालूजी (छापर) का नाम अप्रकट रूप में अपने उत्तराधिकारी के रूप में अंकित किया। आज हम डालगणी का बड़े सम्मान के साथ स्मरण करते हैं। उनके जीवन से हमें पवित्र प्रेरणा मिलती रहे, यह कामना करते हैं।

तीसरा प्रसंग--भाद्रव शुक्ला द्वादशी को परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने अपने उत्तराधिकारी के नाम की घोषणा की थी। उन्होंने गुरुदेव तुलसी के महाप्रयाण होने के बाद बहुत ही जल्दी फरमा दिया था कि मैं जल्दी ही अपने उत्तराधिकारी की घोषणा करना चाहता हूं। इस घोषणा के लिए उन्होंने भाद्रव शुक्ला द्वादशी का दिन निर्धारित किया। अपनी पूर्व घोषणा के अनुसार आज के दिन गंगाशहर चतुर्मास के दौरान चौपड़ा स्कूल में उन्होंने अपने उत्तराधिकारी की घोषणा की। धर्मसंघ का एक महत्त्वपूर्ण कार्य, जो उनके द्वारा करणीय था, जिसके लिए गुरुदेव तुलसी ने भी संकेत किया था कि यह कार्य कभी उचित अवसर पर महाप्रज्ञजी करेंगे, वह कार्य उन्होंने आज के दिन किया था।

मैं आज के दिन परम पूज्य गुरुदेव तुलसी और परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी का श्रद्धा के साथ स्मरण करता हूं, उन्हें वंदन करता हूं। हमारा धर्मसंघ खूब अच्छा विकास करता रहे, हम आगे बढ़ते रहें और अच्छी सेवा करते रहें, मंगलकामना।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर के संसारपक्षीय अनुज श्री श्रीचंद दूगड़ ने पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आज राजस्थान सरकार के पाठ्य पुस्तक मंडल के सचिव श्री ललिनी कठोतिया व ग्रामीण विकास विभाग के वित्तीय सलाहकार श्री राधेश्याम मीणा ने पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन पथदर्शन से लाभान्वित हुए।

२१६वां भिक्षु चरमोत्सव

२२ सितम्बर। भाद्रपद शुक्ला त्रयोदशी। २१६वां भिक्षु चरमोत्सव। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद-चेन्नई के सदस्यों, मुमुक्षु बहनों और मुनिवृंद ने पृथक-पृथक रूप में समूह गीत प्रस्तुत किए।

मुख्यनियोजिकाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'आज आचार्य भिक्षु का निर्वाणोत्सव है। उनके जीवन का चलचित्र हमें दिखाई दे रहा है। वे एक आध्यात्मिक पुरुष थे। उनके केन्द्र बिन्दु थे वीतराग पुरुष। उन्होंने जीवन भर वीतरागता की साधना की। उनका दर्शन भी वीतराग वाणी पर आधारित था। उनके साहित्य में उनका दर्शन मुखर बना हुआ है। उनके विचारों की प्रासंगिकता आज भी विद्वान लोग अनुभव कर रहे हैं। उनके भीतर ज्ञान का स्रोत था। उनमें अंतःप्रज्ञा जागृत थी, उसी के आधार पर उन्होंने समाधान प्रस्तुत किए। उनका चिंतन मौलिकता लिए हुए था। वे प्रखर तार्किक भी थे। विरोधों की स्थितियों में भी उन्होंने विपुल साहित्य रचना की। आज के इस पावन अवसर पर मैं महामना आचार्य भिक्षु के चरणों में अपनी श्रद्धाजंलि अर्पित करती हूं।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'आचार्य भिक्षु एक ऐसा नाम है, जो कानों में जाते ही असीम आस्था पैदा करता है। जो उन्हें अपना गुरु मानते हैं, उनमें तो आस्था का संचार है ही, जो उनमें आस्थावान नहीं है, उन्हें भी यह अनुभव होता है कि आचार्य भिक्षु के नाम से उन्हें शांति और सुख का अनुभव होता है। इसी कारण वे लोग स्वयं को किसी न किसी रूप में आचार्य भिक्षु से जुड़ा हुआ पाते हैं। आचार्य भिक्षु एक क्रांतिकारी महापुरुष थे। उन्होंने कंटकाकीर्ण पथ स्वीकार कर अपनी क्रांति के द्वारा उस पथ को फूलों का पथ बना दिया। क्रांति वही घटित कर सकता है, जो प्रतिस्रोतगामी होता है। आचार्य भिक्षु ने प्रतिस्रोतगामिता का पथ स्वीकार किया। कठिनाइयों की स्थितियों में भी वे रुके नहीं, निरंतर बढ़ते गए। वे महान साधक थे। उनके सामने जैसी स्थितियां आईं, दूसरा कोई व्यक्ति होता तो संभवतः वह अपना पथ बदल देता, किन्तु आचार्य भिक्षु ने अपना पथ नहीं बदला, अपितु अपनी अनासक्त चेतना, निर्भीक चेतना से उस पथ को राजपथ बना दिया।

उनके जीवन व दर्शन की गहराइयों को समझने के लिए उनके साहित्य का गहन अध्ययन अपेक्षित है। उनके साहित्य पर सघन शोध किया जाए तो बहुत से नए-नए तथ्य और रहस्य प्राप्त हो सकते हैं। आचार्य भिक्षु अनुशासन के सूत्रधार थे। धर्म के विषय में भी उनका चिंतन विलक्षण था। ऐसा कहा जा सकता है कि वे सार्वभौम धर्म के मंत्रदाता थे। आज आचार्य भिक्षु का चरमोत्सव है। उन्होंने अपने जीवन को दांव पर लगा कर क्रांति का सूत्रपात किया। हम उनके चरणों में अपने अंतःकरण की समग्र आस्था से उनको वंदन करते हैं और यह अपेक्षा करते हैं कि आचार्य भिक्षु का जीवन हमारे सामने हमेशा आलोक दीप बनकर हमारा रास्ता प्रशस्त करता रहे, हम उनके पथ पर चलते रहें और उनके सक्षम उत्तराधिकारी परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के नेतृत्व में स्वयं आचार्य भिक्षु को जानें, उनके दर्शन को समझने और जीने का प्रयत्न करें, यहीं मंगलकामना।'

मुख्यमुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'आचार्य भिक्षु के जीवन में मेरु-सी ऊंचाई और समुद्र-सी गहराई थी। उनकी साधना को अनेक परिप्रेक्ष्यों में देखा जा सकता है। उनका संकल्प अकंपित था। अपने संकल्पबल के आधार पर उन्होंने विरोधों में भी सफलता का अर्जन किया। उनकी दृढ़ता के पीछे आगम का आलोक था। वे स्थिरचेता महापुरुष थे। इसी कारण उन्होंने महान क्रांति घटित की और विराट साहित्य संरचना की। वे महान चर्चावादी आचार्य थे। उनका इन्द्रिय संयम विलक्षण था। इन्द्रिय संयम की साधना के द्वारा उन्होंने अनेकानेक उपलब्धियां प्राप्त कीं। उनकी सहिष्णुता भी विशिष्टतम थी। इसी कारण भयानक कठिनाइयों की स्थितियों में भी वे उपशांत रहे। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी में आचार्य भिक्षु के जीवन की विशेषताओं को साक्षात् किया जा सकता है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें आपकी कुशल शासना में साधना करने का सौभाग्य प्राप्त है। आज के इस पुनीत प्रसंग पर आचार्य भिक्षु का पावन स्मरण करते हुए मैं यही मंगलकामना करता हूं कि आचार्यप्रवर की अनुशासना हमें युगों-युगों तक प्राप्त होती रहे।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आज भाद्रपद शुक्ला त्रयोदशी है। आज के दिन महामना आचार्य भिक्षु ने महाप्रयाण किया था। सिरियारी गांव में अनशन की स्थिति में उन्होंने उस जीवन का अंतिम श्वास लिया था। मृत्यु तो हर व्यक्ति की होती है, किन्तु सचेतन अवस्था में अनशन करके आत्मसमाधि की स्थिति में मरण का वरण करना एक विशेष बात होती है। आचार्य भिक्षु ने मानों उस विशेष बात को स्वीकार किया। गत कल का दिन उनके अनशन ग्रहण करने का था और आज का दिन अनशन के अवसान का था।

आचार्य भिक्षु का जीवन आसाधारण था। जहां एक ओर उनमें वैराग्य भावना का दर्शन किया जा सकता है, आत्मार्थीपन का दर्शन किया जा सकता है, वहीं उनमें वैदुष्य का भी अवलोकन किया जा सकता है। उनमें आस्थाभाव को निहारा जा सकता है। उनकी उच्च कोटि की साधना को भी देखा जा सकता है। उन्होंने स्थानकवासी परंपरा से अभिनिष्क्रमण किया था। ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि वह उनका अभिनिष्क्रमण वैराग्य भावना पर आधारित था। बताया गया है कि उस समय स्थानकवासी आम्नाय के रघुनाथजी महाराज के संप्रदाय में यह धारणा थी कि रघुनाथजी महाराज अपना उत्तराधिकार भीखणजी को सौंपेगें। ऐसी उज्ज्वल संभावना जिस व्यक्ति के सामने हो और वह समझदार व्यक्ति उस संभावना से दूर होते हुए बीहड़ पथ का चयन करे तो अनुमान लगाया जा सकता है कि उसकी आधारशिला वैराग्य भावना है। तुच्छ कारणों से ऐसा विचार करना अलग बात है, सिद्धांतों के आधार पर, आचार की बातों के आधार पर ऐसा करना बड़ी बात है। कोई साधु तुच्छ बातों को लेकर मन को अस्थिर कर लेता है, उसे तो मैं किसी दृष्टि से अभागा व्यक्ति मानता हूं। साधना के एक अच्छे संगठन को छोड़ने का प्रयास करने वाला, भावना करने वाला और वैसा कर लेने वाला तो एक दृष्टि से दया का पात्र होता है। मानों वह तो प्राप्त चिंतामणि रत्न को कौवे को उड़ाने के लिए फेंक देता है।

आचार्य भिक्षु ने जिसे मानों प्रसूत किया, पाला-पोसा, आगे बढ़ाया, हम आज उस संघ के सदस्य हैं। हमारे संघ के जनक आचार्य भिक्षु हैं। उनकी पीढ़ियां आगे से आगे चलीं और अतीत में उनकी कुल दस पीढ़ियां हो गईं। आचार्य भिक्षु के जीवन में आचार व साधना की ऊंचाई थी तो ज्ञान की गहराई भी थी। वे एक श्रुतधर आचार्य थे। उनके ग्रंथों का अध्ययन करें तो ज्ञात हो सकता है कि उनमें ज्ञान की कितनी गहराई थी। भले 'नव पदार्थ की चौपई' को देख लें, 'अनुकंपा की चौपई' को देख लें, 'इन्द्रियवादी चौपई', 'कालवादी चौपई' को देख लें, कितने-कितने ग्रंथ आचार्य भिक्षु के हैं। उनका कितना आख्यान साहित्य है। ज्ञान होता है और कवित्व शक्ति होती है, तभी ऐसी रचनाएं हो सकती हैं। उनका वैदुष्यात्मक व्यक्तित्व भी मानों विशिष्ट था। उनका साधना का व्यक्तित्व भी वैशिष्ट्य लिए हुए था। उन्होंने सुविधा से मिलने वाले स्थानकों का परित्याग कर कठिनाई की स्थिति को स्वीकार किया। कभी उन्हें स्थान नहीं मिला तो कभी मिले हुए स्थान को खाली कर विहार करना पड़ा और कभी तो चतुर्मास के बीच में स्थान खाली करना पड़ा। मानों उन्होंने कठिनाइयां सहकर भावी पीढ़ियों के लिए अच्छा मार्ग बना दिया। उन्हें आहार-पानी की समस्या भोगनी पड़ी, उनका विरोध भी हुआ। आज हम उनकी संतानें उन कठिनाइयों से काफी अंशों में मुक्त हैं। आचार्य भिक्षु ने कितना कष्टपूर्ण जीवन जीया, यह उनकी साधना थी। कठिनाइयां न आएं तो अच्छा है, किन्तु कठिनाइयां आ जाएं तो उन्हें सहने का माद्दा साधु में रहना चाहिए। महामना आचार्य भिक्षु मानों ज्योतिर्मान महापुरुष थे। ऐसा प्रतीत होता है कि पिछले जन्मों/जन्म की साधना उनके साथ में थी और वह साधना प्राकट्य को प्राप्त हो गई।

आचार्य भिक्षु ने अपना दर्शन भी दिया। उन्होंने सांसारिक उपकार और आध्यात्मिक उपकार की बात बताई। हम मनन करें कि एक आदमी भूखा है, उसको किसी गृहस्थ ने भोजन खिला दिया या किसी प्यासे को पानी पिला दिया, उसको राहत मिल गई। यहां ध्यातव्य है कि उसको रोटी खिलाने या पानी पिलाने से क्या उसका मोक्ष निकट हो गया? उत्तर स्पष्ट है कि उससे उसका मोक्ष निकट नहीं हुआ। आचार्य भिक्षु ने कहा कि यह सांसारिक उपकार है। किसी निराश्रय को किसी दयालु गृहस्थ ने कोई मकान दिलवा दिया। क्या मकान मिलने से उसके संवर-निर्जरा होगी, उसका मोक्ष निकट होगा? ऐसा नहीं लगता। यह संसार का उपकार है। भोजन,

पानी, कपड़ा, मकान आदि असंयमी जरूरतमंद को देने से उसे राहत मिल सकती है, सुख मिल सकता है, किन्तु उससे उसका मोक्ष निकट नहीं होता।

दूसरी ओर कोई संत किसी व्यक्ति को समझाकर हिंसा, झूठ, चोरी आदि का परित्याग करा दे तो उससे उसका मोक्ष निकट हो सकता है, यह आध्यात्मिक उपकार है। इस प्रकार आचार्य भिक्षु ने उपकार को पृथक-पृथक रूप में विवेचित किया। आचार्य भिक्षु के दृष्टांत भी हैं। संतों ने चोरों को समझाया तो चोरों ने चोरी का त्याग किया। यहां दो काम हुए--त्याग और सेठ के धन का बचना। चोरों ने चोरी का त्याग किया, वह धर्म का उपकार हुआ। सेठ का धन बचा, वह धर्म का कार्य नहीं है, मोक्ष का उपकार नहीं है, वह तो प्रासंगिक बात है। कसाइयों को समझाकर बकरों को मारने का त्याग करवाया तो यहां भी दो कार्य हुए। कसाइयों की आत्मा का सुधार और बकरों का बचना। आत्मा सुधरी, वह धर्म है, आध्यात्मिक उपकार है। बकरे बचे, वह सांसारिक उपकार है, प्रासंगिक बात है।

आचार्य भिक्षु ने दृष्टांतों के द्वारा कैसे सिद्धांतों को समझाने का प्रयास किया। ऐसे श्रुतधर, प्रज्ञावान, आस्थावान, ज्योर्तिधर, साधानाशील, महामना आचार्य भिक्षु ने करीब ७७ वर्षों का जीवन जीकर अनशन स्वीकार कर आज के दिन सिरियारी में उस जीवनकाल का अंतिम श्वास लिया था। हम महामना आचार्य भिक्षु के प्रति प्रणति अर्पित करते हैं, वंदन करते हैं। उनके जीवन से हम सभी को त्याग, संयम, ज्ञान आदि की प्रेरणा मिलती रहे, आत्मबल-मनोबल की प्रेरणा मिलती रहे, यह अभिकांक्ष्य है।'

पूज्यप्रवर ने २१६वें आचार्य भिक्षु चरमोत्सव के उपलक्ष में स्वरचित गीत का समुच्चारण करते हुए गीत में उल्लिखित घटनाओं का सरसशैली में वर्णन किया। संघगान के साथ कार्यक्रम परिसम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

श्री प्रीतेश सिसोदिया ने पूज्यप्रवर से २७ दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

रात्रि में भिक्षु चरमोत्सव के संदर्भ में 'धम्म जागरण' का आयोजन हुआ। रात्रि करीब ११.३० बजे तक चले इस कार्यक्रम में परम पूज्य आचार्यप्रवर का भी कुछ समय के लिए पदार्पण हुआ। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने स्वरचित गीत 'तेरापंथ अधिराज' गीत आदि का संगान किया। मुख्यमुनिश्री ने स्वयं द्वारा नवरचित गीत 'मंगलकारी स्वाम भिक्षु का नाम बड़ा ही हितकारी' गीत को प्रस्तुति दी। इस 'धम्म जागरणा' के दौरान अनेक लोगों ने अपनी-अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि जम्बूकुमारजी (मिंजूर) ने किया।

आज विश्व हिन्दू परिषद के पूर्व उपाध्यक्ष श्री बालकृष्ण नाईक ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

●

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे- 9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला